

Mental development of Infancy

भूमिका (INTRODUCTION)

मानसिक विकास से अभिप्राय ज्ञान भण्डार में वृद्धि एवं उसके उपयोग से है। मानसिक शक्तियों के उदय तथा वातावरण के प्रति समायोजन की क्षमता का नाम मानसिक विकास है। मानसिक विकास में अवबोध, स्मरण, ध्यान केन्द्रित करना, निरीक्षण, विचार, तर्क, समस्या-समाधान, चेतना आदि शक्तियाँ आती हैं।

मानसिक विकास, स्वतन्त्र रूप से कुछ नहीं है। सुरेश भटनागर के अनुसार—“विकास के अन्य स्तरों तथा अवस्थाओं का योग है और समस्त विकास की समग्र अभिव्यक्ति है। मानसिक विकास एक जटिल प्रक्रिया है और बुद्धि-लब्धि के अंशों में वृद्धि, विकास का ढंग, परिवेश तथा परिस्थिति इसके मुख्य आधार हैं। भाषा तथा सम्प्रत्यात्मक विकास द्वारा इसकी अभिव्यक्ति होती है।”

मानसिक विकास के पक्ष इस प्रकार हैं—

1. संवेदना (Sensation)
2. निरीक्षण (Observation)
3. स्मरण (Remembering)
4. कल्पना (Imagination)
5. चिन्तन (Thinking)
6. निर्णय (Judgement)
7. बुद्धि (Intelligence)
8. रुचि एवं अभिरुचि (Interest and Attitude)
9. प्रत्यक्षीकरण (Perception)
10. ध्यान (Attention)
11. तर्क (Reasoning)
12. सीखना (Learning)
13. भाषा (Language)।

जन्म के समय शिशु का मस्तिष्क पूर्णतया अविकसित होता है और वह अपने वातावरण एवं अपने आस-पास के व्यक्तियों के बारे में कुछ भी नहीं समझता है। जैसे-जैसे उसकी आयु में वृद्धि होती जाती है, वैसे-वैसे उसके मस्तिष्क का विकास होता जाता है और वातावरण एवं व्यक्तियों के बारे में अधिक-ही-अधिक ज्ञान प्राप्त करता जाता है। यहाँ यह बता देना आवश्यक है कि दो शिशुओं

या बालकों के मानसिक विकास में समानता न होकर अन्तर होता है। इस सम्बन्ध में हरलॉक ने लिखा है—“क्योंकि दो बालकों में समान मानसिक योग्यताएँ या समान अनुभव नहीं होते हैं, इसलिए दो व्यक्तियों में किसी वस्तु या परिस्थिति का समान ज्ञान होने की आशा नहीं की जा सकती है।”

“As no two children have the same intellectual abilities or the same experiences, no two individuals can be expected to have the same understanding of an object or situation.”

—Hurlock (p. 366)

शैशवावस्था में मानसिक विकास

(MENTAL DEVELOPMENT IN INFANCY)

सोरेनसन (Sorenson) (pp. 31-32) के शब्दों में—“जैसे-जैसे शिशु प्रतिदिन, प्रति मास, प्रति वर्ष बढ़ता जाता है, वैसे-वैसे उसकी शक्तियों में परिवर्तन होता जाता है।”

हम इन परिवर्तनों पर प्रकाश डाल रहे हैं; यथा—

1. **जन्म के समय व पहला सप्ताह**—जॉन लॉक (John Locke) का मत है—“नवजात शिशु का मस्तिष्क कोरे कागज के समान होता है, जिस पर अनुभव लिखता है।” फिर भी, शिशु जन्म के समय से ही कुछ कार्य जानता है; जैसे—छींकना, हिचकी लेना, दूध पीना, हाथ-पैर हिलाना, आराम न मिलने पर रोकर कष्ट प्रकट करना और सहसा जोर की आवाज सुनकर चौंकना।

2. **दूसरा सप्ताह**—शिशु प्रकाश, चमकीली और बड़े आकार की वस्तुओं को ध्यान से देखता है।

3. **पहला माह**—शिशु, कष्ट या भूख का अनुभव होने पर विभिन्न प्रकार से चिल्लाता है और हाथ में दी जाने वाली वस्तु को पकड़ने की चेष्टा करता है।

4. **दूसरा माह**—शिशु आवाज सुनने के लिए सिर घुमाता है। सब स्वरों की ध्वनियाँ उत्पन्न करता है और वस्तुओं को अधिक ध्यान से देखता है।

5. **चौथा माह**—शिशु सब व्यंजनों की ध्वनियाँ करता है, दी जाने वाली वस्तु को दोनों हाथों से पकड़ता है और खोये हुए खिलौने को खोजता है।

6. **छठा माह**—शिशु सुनी हुई आवाज का अनुकरण करता है, अपना नाम समझने लगता है एवं प्रेम और क्रोध में अन्तर जान जाता है।

7. **आठवाँ माह**—शिशु अपनी पसन्द का खिलौना छाँटता है और दूसरे बच्चों के साथ खेलने में आनन्द लेता है।

8. **दसवाँ माह**—शिशु विभिन्न प्रकार की आवाजों और दूसरे शिशुओं की गतियों का अनुकरण करता है एवं अपना खिलौना छीने जाने पर विरोध करता है।

9. **पहला वर्ष**—शिशु चार शब्द बोलता है और दूसरे व्यक्तियों की क्रियाओं का अनुकरण करता है।

10. **दूसरा वर्ष**—शिशु दो शब्दों के वाक्यों का प्रयोग करता है। वर्ष के अन्त तक उसके पास 100 से 200 तक शब्दों का भण्डार हो जाता है।

11. **तीसरा वर्ष**—शिशु पूछे जाने पर अपना नाम बताता है और सीधी या लम्बी रेखा देखकर वैसे ही रेखा खींचने का प्रयत्न करता है।

12. **चौथा वर्ष**—शिशु चार तक गिनती गिन लेता है, छोटी और बड़ी रेखाओं में अन्तर जान जाता है, अक्षर लिखना आरम्भ कर देता है और वस्तुओं को क्रम से रखता है।

13. **पाँचवाँ वर्ष**—शिशु हल्की और भारी वस्तुओं एवं विभिन्न प्रकार के रंगों में अन्तर जान जाता है। वह अपना नाम लिखने लगता है, संयुक्त और जटिल वाक्य बोलने लगता है एवं 10-11 शब्दों के वाक्यों को दोहराने लगता है।